ISSN 2394-5303

प्रिंटिंग एरिया

Issue-45, Vol-02 April- 2018

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

27) भारतीय निवडणूक यंत्रणेतील दोष विशेष संदर्भ : एक देश एक निवडणूक
प्रा.डॉ. आर.बी. लक्षटे देगलूर || 123

28) आरक्षण आणि भारतीय संविधान
प्रा. डॉ. दत्ताजी हुलप्पा मेहत्रे, जि. नांदेड || 129

29) लोकसंख्या अभ्यास
प्रा. विलास सोमाजी पवार, हिंगोली || 133

30) बालवाङ्मयातील अनुवादित मराठी बालकथा लेखन
सविता अशोकराव गोविंदवार, गडचिरोली || 135

31) तनावजन्य विघटन की स्थितियाँ : आधे अधूरे नाटक
डॉ. विजयकुमार एस. वैराटे, पैठण. || 139

32) बिहार के विकास में कुटीर एवं लघु उद्योगो का महत्व .....
डॉ० पूनम कुमारी, बिहार || 142

33) जैन तीर्थ एवं तीर्थस्थल
डॉ.संज्ञा,हजारीबाग || 147

34) अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता....
वैभव राघव, डॉ.चन्द्र कॅवर || 152

35) इक्कीसवीं सदी की पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों में डॉ. नीलम सेठी...
डॉ.डिम्पल शर्मा, दीनानगर || 159

36) हिन्दी नाटकों में बदलते पारिवारिक मूल्य
डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल || 162

37) भीलवाडा शहर की संरचना, विद्यमान भू—उपयोग एवं नियोजन:
डॉ. कुमार कार्तिकेय, भीलवाड़ा (राज.) || 164

38) श्रीमद् अमृतवाग्भवाचार्य का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
नरेन्द्र भारती || 172

39) इण्डो—रोमन व्यापारिक केन्द्र अरिकमेडु
डॉ. प्रीति पाण्डे, उज्जैन (म.प्र.) || 175

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal — http://www.vidyawarta.blogspot.com

Scanned with ACE Scanner

35

इक्कीसवीं सदी की पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों में डॉ. नीलम सेठी कृत कविता संग्रह मौसमों के साथ–साथ : एक परिचय

डॉ . डिम्पल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

१८५७ ई के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारतीय साहित्यकारों ने भारतीय समाज में नई चेतना भरने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अपनी कलम चलाई। भारत के अलग–अलग राज्यों, कस्बों, जिलों, शहरों के रहने वाले साहित्यकारों ने भारतीय समाज के लोगों में नवीन चेतना को जागृत किया, यह नवीन चेतना पंजाब में रहने वाले लेखकों, कहानीकारों, कवियों आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के दिलों दिमाग तक पहुँचाई। आधुनिक काल का आरम्भ प्राय: सभी विद्वानों ने भारतेंदु के साहित्यिक उन्मेष में स्वीकार किया है। जिस प्रकार हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ भारतेन्दु से माना जाता है उसी प्रकार पंडित श्रद्धागम फिल्लौरी पंजाब के आधुनिक हिन्दी कविता के भारतेन्दु माने जाते हैं। पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार मोहन सपरा, हरमहेन्द्र सिंह बेदी, उपेन्द्रनाथ अश्क, शशि भूषण शीतांपु, यशपाल, अज्ञेय, मोहन राकेश, कृष्णा सोबती, सुरेश सेठ, विष्णु प्रभाकर, सुदर्शन, भीष्म साहनी, देवेन्द्र सत्यार्थी, मनमोहन सहगल आदि हुए है।

आधुनिक काव्यधारा में पंजाब प्रान्तीय महिला काव्य रचना का समावेश कुछ विलम्ब से हुआ। फिर भी पंजाब के आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी लेखन का पर्दापण जगतावली सूद १९२५ से माना जा सकता है। इसके साथ दूसरा नाम है–शंकुतला श्री वास्तव १९३० जिनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है। पंजाब के आधुनिक हिन्दी कविता में पंजाब की हिन्दी कवयित्रियों के कशतित्व का महत्त्वपूर्ण योगदान है जिसके बिना पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास अभी तक अधूरा है। पंजाब से संबंधित २० कवयित्रियां और उनकी काव्य कृतियां जो इक्कीसवीं सदी की परिधी में आती है वह इस प्रकार है–

इन्दु वर्मा : 'अनहदनाद' २००१
उशा आर. शर्मा : 'दोस्ती हवाओं से' २००३, 'परिन्दे धूप के २००५, 'सूर्य मेरा तुम्हारा' २००९, 'बूंद बूंद एहसास' २०१२।
कीर्ति केसर : 'मुझे आवाज देना' २००२, 'अस्तित्व नये मोड़ पर' २०१२
गगन गिल : 'थपक थपक दिल थपक थपक' २००३
गीता डोगरा : 'दहलीज' २००६
चम्पा वैद : 'स्वप्न में घर' २००१
निर्मल कांता : 'काँच के टुकड़े' २०१०
निर्मल वालिया : 'पावस के गीत' २००६, 'बंदगी' २००७, 'रूहों के साये' २००८, 'आतिश' २००९, 'दीप–राग' २०१०, 'ठहरा हुआ आसमान' २०११
नीलम सेठी : 'मौसमों के साथ–साथ' २००१
पुष्पा राही : 'स्वत:' २००४, 'स्वयं' २००७, 'कुछ अलग' २००८, 'लीक से हटकर' २००८, 'बस यूँ ही' २०१०, 'लिखिते–लिखिते' २०११
मधु धवन : 'अमृतमयी' २००३, 'धरा पर खिला दिव्य फूल' २००४, 'कालचक्र' २००४
राज शर्मा : 'हार नहीं मानूंगी' २०१२
रूपिका भनोट : 'समय दहलीज पर' २०१०
विनोद कालरा : 'तुम यही कहीं हो' २००७, 'मैं खुशबू बनकर लौटूँगी' २०१०
विनोद सूद : 'पल्लिवित आस्था' २००१
शुकुतन्ला श्री वास्तव : 'पंख क्या अब आसमां क्या' २००२
शशि प्रभा : 'आइनों से झांकते अक्स' २००३, 'घने अंधेरे में भी' २००५, 'तेरा किस्सा मेरा किस्सा' २००७, 'बहुत कुछ अनुत्तरित' २०११
शशि सहगल : 'मौन से संवाद' २००१
शीला गुजराल : 'धरती का आतनाद' २००४
सुशमा लता अरोड़ा : 'नदी का गीत' २०११

इक्कीसवी सदी की बीस कवयित्रियों के काव्य संग्रह समकालीन स्थितियों को दर्शाने में सक्षम है । परन्तु प्रस्तुत पत्र में पंजाब के हिन्दी साहित्य की कवयित्री डॉ.

Scanned with ACE Scanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta
UGC
Jr.No.62759
UGC Approved Refereed Journal

ANNIVERSARY CELEBRATIONS
6th
ANNIVERSARY
2018

Vidya warta®

Issue-21, Vol-02, Jan. to March 2018

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

27) बाल कल्याण समिती : महाराष्ट्र राज्यातील समिती सुविधांचा अभ्यास
श्री अतुल आनंदराव देसाई || 112

28) "चले जाव" ची पंचाहत्तरी
डॉ. रघुधाथ धों. शेळे , ढवळपुरी, || 115

29) आदिवासी क्षेत्रों में वृहद् विकास परियोजनाओं का क्रियान्वयन : स्थानीय समुदायों.....
नमिता अग्रवाल, अमित कुमार, श्रीगंगानगर. || 120

30) छत्तीसगढ़ के बिलासपुर नगर में प्रवासी सीमांत कामगारों का आर्थिक विश्लेषण:.....
डॉ. अब्दुल जावेद कुरैशी, बलौदा, आर. के खोटे प्राचार्य, टेमरी || 125

31) हिंद कहानी साहित्य में चित्रित 'थर्ड जेन्डर'
प्रा. रगडे पी. आर., वाघोली, || 128

32) डोगरी साहित्य जगत का ध्रुव तारा : यशपाल "निर्मल"
आशु शर्मा ,जम्मू. || 133

33) भारत में जनजातीय समुदाय की स्थिति
डॉ. ललित कुमार, रामपुर (उ.प्र.) || 135

34) आतंकवाद, पर्यटन और विकास (एक तुलनात्मक अध्ययन)
डॉ. सुधाँशु मिश्र, अजीतमल, डॉ. शुभा द्विवेदी, उन्नाव || 141

35) रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्म्य (विलास) में चित्रकूट एवं राम.....
डॉ. डिम्पल, दीनानगर || 150

36) वैदिक साहित्य में स्त्री शिक्षा
डॉ. अलका तिवारी, इलाहाबाद || 155

37) कमीशन बड़ौदा एवं नवल किशोर प्रेस
डॉ. वन्दना सिंह, लखनऊ || 158

38) ज्ञान, ग्रंथ एवं ग्रंथागार: एक ऐतिहासिक विश्लेषण
अजय सिंह, वाराणसी || 160

39) भारत में चिकित्सा पर्यटन का विकास
डॉ. भुनेश्वर टेंभरे, मण्डला (म.प्र.) || 163

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with ACE Scanner

35

रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्म्य (विलास)' में चित्रकूट एवं राम का महत्त्व

डॉ. डिम्पल
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी–विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

****

हिन्दी साहित्येतिहास के मध्यकालीन युग के उत्तरमध्यकाल अर्थात् रीतिकाल में श्रृंगार काव्य, नीति काव्य, वीर काव्य, सतसई काव्य, प्रकृति से संबंधित काव्य, काव्यशास्त्रीय काव्य, छंद से संबंधित काव्य मिलते है। इन सब काव्यों के अतिरिक्त श्रृंगार काव्य के साथ–साथ भक्ति संबंधित काव्य भी लिखे गए जबकि इस काल में श्रृंगार काव्य ज्यादा मात्रा में लिखा गया, परन्तु यह तथ्य सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि इस काल में एक ओर काव्य लिखा जाता रहा जिसे विलास काव्य के नाम से जाना जाता है इन विलास काव्यों में श्रृंगारिकता के साथ–साथ भक्ति की भी प्रधानता मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र रीतिकालीन विलास कृति 'चित्रकूट माहात्मय' में चित्रकूट नामक स्थल और राम के महत्त्व से संबंधित है। 'चित्रकूट विलास' आदि से अंत तक भक्ति से ओतप्रोत है। चित्रकूट का महत्त्व समझने से पहले चित्रकूट और विलास का अर्थ जानना जरूरी है।

चित्रकूट शब्द दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें चित्र का अर्थ है– 'रंग–बिरंगा, तस्वीर, आलेखन, किसी चीज की प्रतिमूर्ति।'१ परन्तु जहाँ पर चित्र का अर्थ रंग बिरंगा से संबंधित है और कूट का अर्थ है–'बांदा जिले का एक पर्वत।'२ इस आधार पर चित्रकूट का अर्थ हुआ– रंग–बिरंगा एक पर्वत। चित्रकूट से भाव– जो हिमालय की एक चोटी के नाम से संबंधित है। चित्रकूट का अध्यात्मिक रूप से बड़ा ही महत्त्व है। कहते हैं कि चित्रकूट में ही भगवान श्री राम ने तुलसीदास को दर्शन दिए थे, और जो हनुमान जी की कृपा से यह संभव हुआ था। अनुमान है कि चित्रकूट में आज भी हनुमान जी वास करते हैं जहां भक्तों को दैहिक और भौतिक ताप से मुक्ति मिलती है। कारण यह है कि यहीं पर भगवान राम की कृपा से हनुमान जी को उस ताप से मुक्ति मिली थी जो लंका दहन के बाद हनुमान जी को कष्ट दे रहा था। इस विषय में एक रोचक कथा है कि, हनुमान जी ने प्रभु राम से कहा, लंका जलाने के बाद शरीर में तीव्र अग्नि बहुत कष्ट दे रही है, तब श्री राम ने मुस्कराते हुए कहा कि–चिंता मत करों, चित्रकूट पर्वत पर जाओं। वहां अमृत तुल्य शीतल जलधारा बहती है, उसी से कष्ट दूर होगा। चित्रकूट का मतलब (रामायण) एक प्रसिद्ध रमणीक पर्वतीय स्थान जहां वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता ने निवास किया था। चित्रकूट एक ऐसा स्थल है जो प्रकृति द्वारा स्वयं निर्मित है यहां पहुँच कर मानव का मन शांत और आत्मशुद्धि का अनुभव करता है। चित्रकूट नामक स्थल को यदि खोजा जाए तो भारत के दो उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश नामक राज्यों का नाम सामने आता है। जबकि इलाहाबाद से दक्षिण पश्चिम में १२५ किलो. मीटर की दूरी पर उत्तरप्रदेश के बाँदा और मध्यप्रदेश के सतना जनपदों में पावन मंदाकिनी अथवा ''पयस्विनी नदी' (पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं।)३ के सुरम्य तट पर अवस्थित चित्रकूट अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण सदैव से ऋषि–मुनियों के आकर्षण का केंद्र रहा है। अत्रि ऋषि ने यहां घोर तपस्या की थी। चित्रकूट १७वीं से १९वीं शताब्दी में रसिक भक्तों का केंद्र रहा है। यहां राम–सीता और लक्ष्मण ने स्वनिर्मित पर्णकुटी में कुछ मास निवास किया था। यही स्थल से श्री राम ने भरत को अयोध्या के राजसिंहासन का उत्तरदायित्व सहर्ष सौंपा था। यह स्थल भारत के विशिष्टत्म तीर्थस्थलों में गिना जाता है। कहते हैं यह एक ऐसा स्थल है यहां पर श्री राम के पद अंकित है और सर्व इच्छाओं की पूर्ति करने वाला तीर्थ स्थान है।

Scanned with ACE Scanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-09 January to March 2020

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

40) समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं मे हिंदी का योगदान ||172
डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद, जि. औरंगाबाद

41) कुपोषण का यर्थात्परक विश्लेषण (टीकमगढ़ जिला के विशेष संदर्भ में) ||175
डॉ. उषासिंह & एच. पी. सिंह, टीकमगढ़ (म.प्र.)

42) भक्ति आन्दोलन का उदय ||177
डॉ० राकेश उपाध्याय, आजमगढ़

43) महात्मा गाँधी: एक विचार, वर्तमान सन्दर्भ में प्रासांगिकता ||180
Rajkumar Yadav, Gwalior

44) भारत में मजदूर आन्दोलन : एक सिंहावलोकन ||184
डॉ० सबा मसूद, दरभंगा

45) परमानंद दास की गुरु भक्ति (पांडुलिपि श्री गुरु भक्ति विलास के विशेष संदर्भ में) ||190
डॉ. डिम्पल शर्मा, दीनानगर

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

Scanned with ACE Scanner

45

परमानंद दास की गुरु भक्ति

(पांडुलिपि श्री गुरु भक्ति विलास के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डिम्पल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज दीनानगर

गुरु की भक्ति को जो मन में धारण करता है उसकी भक्ति को मैं मन में धारण करता हूँ। गुरु के दरवाजे पर जो भी जीव जन्तु जाता है वह उस पर भी दया भाव रखते हैं। गुरु के सामने जाते ही हर पैर तीर्थ बन जाता है। गुरु कृपा से ही सतसंग पैदा हुआ वो मानों संतों के दर्शन से पुण्य पैदा हो गया। गुरु कृपा से परमानंद की प्राप्ति होती है। (परमानंद दास)

निर्गुण संतों ने ब्रह्म को निर्गुण माना हैं। ईश्वर के रूप में विश्व की आत्मा कहलाता है। तद्नुसार आत्मा ने ही देह धारण कर जीव का अभिधान धारण किया। शंकराचार्य ने भी तरंग और तारंग रूप में जीव और ब्रह्म की चर्चा करते हुए जीव की लघुता को स्वीकार किया है। जीव अविद्या के कारण इस अभेद को भूलकर अपने आपको नाम और रूप के प्रपंच को सत्य मानकर जीव को आवागमन के चक्कर में भटकना पड़ता है। इस संसार के सभी असक्तिपूर्ण आकर्षण ही किसी समय उसे वैराग्य की ओर ले जाते हैं और वह भगवान् से एकमेक हो जाने के लिए प्रेरित हो उठता है। इस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति उसे गुरु के उपदेश द्वारा होती है। भक्त या साधक के हृदय में प्रेम की चिंगारी प्रज्जवलित करने वाला गुरु है। वैदिक युग में पुरोहित को ही गुरु कहा जाता था। जैसे–जैसे युग की परिस्थितियाँ बदलती रही, पुरोहित या गुरु का महत्व तदनुकूल ही परिवर्तित रूप धारण करता रहा है। उपनिषद काल, वैष्णव काल, नाथ सम्प्रदाय, मंत्र, तंत्र साधना, योग, ब्रह्मविद्या आदि में गुरु महिमा के दर्शन होते हैं। गुरु के इस इतिहास की परम्परा पौराणिक काल के बाद १३वीं शताब्दी तक एवं उसके बाद भी समान भाव से वैसी ही बनी रही। इसी तरह निर्गुण संतों द्वारा दिए गए गुरु महिमा तथा साधु के अंग में सद्गुरु की स्तुतियाँ एवं वंदनायें इस बात का प्रमाण हैं कि पण्ड़ितों और मुल्लाओं के पाखण्ड़ का खण्डन करते हुए भी उन्होंने गुरु के महत्व को स्वीकार किया है। १

गुरु शब्द के अर्थ की व्याख्या करते हुए गु का अर्थ अंधेरा और रु का अर्थ दूर करने वाला बताया गया है। इस प्रकार गुरु का भाव जो शिष्य के अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, वह गुरु है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित परमानंद दास द्वारा रचित श्री गुरु भक्ति विलास एक ऐसा काव्य है जिसमें गुरु की महिमा का विवरण मिलता है।

राधा वल्लभ सम्प्रदाय मध्ययुग के कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय में हित हरिवंश ही राधा वल्लभ के संस्थापक थे। हित उनका आराध्य तत्व है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय के साहित्य में अध्यात्म पक्ष का विवेचन बहुत कम हुआ है। सम्प्रदाय की परिभाषिक शब्दावली में हित शब्द सबसे महत्वपूर्ण है इसका अर्थ है मांगलिक प्रेम जो परात्पर तत्व है, युगल रूप है, राधा–कृष्ण है। हित हरिवंश श्री कृष्ण की वंशी के अवतार कहे जाते हैं। एक बार जब वे अपने निवास स्थल देव बंद, सहारनपुर से वृंदावन जा रहे थे तो रास्ते में एक महान ब्राह्मण ने इन्हें अपनी दो कन्याएँ और एक श्री विग्रह कृष्ण की मूर्ति को भेंट किया। वृंदावन आकर इन्होंने राधा वल्लभ नाम से लता कुंजों में स्थापित किया, कहते हैं स्वयं श्री राधा जी ने इन्हें वृंदावन आकर स्वतंत्र सम्प्रदाय स्थापित करने का स्वप्न में आदेश दिया था। सन् १५३४ ई. में राधा वल्लभ लाल का पट–महोत्सव हुआ और इसके बाद इन्होंने अपनी राधा वल्लभीय पद्धति का प्रचार प्रारम्भ किया। ठेठ ब्रज का यह कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय अपने प्रभाव और प्रसार में कदाचित वल्लभ सम्प्रदाय के बाद ही आता है।२

राधा कृष्ण भक्त कोश में पाँच परमानंद मिलते हैं। जिनमें से परमानंद दास तृतीय ही श्री गुरु भक्ति

Scanned with ACE Scanner

Nikasi

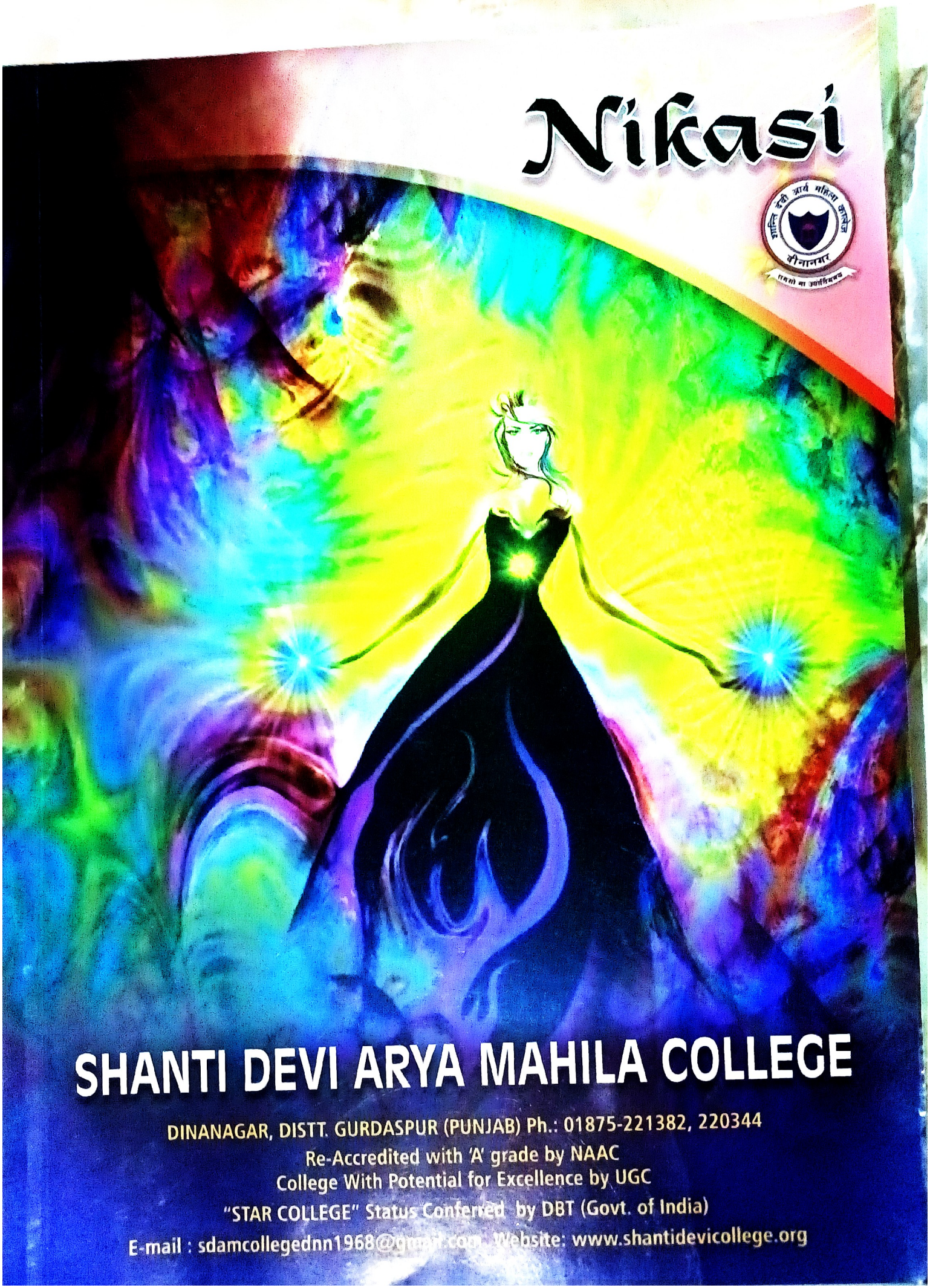

SHANTI DEVI ARYA MAHILA COLLEGE

DINANAGAR, DISTT. GURDASPUR (PUNJAB) Ph.: 01875-221382, 220344

Re-Accredited with 'A' grade by NAAC

College With Potential for Excellence by UGC

"STAR COLLEGE" Status Conferred by DBT (Govt. of India)

E-mail : sdamcollegednn1968@gmail.com, Website: www.shantidevicollege.org

Scanned with ACE Scanner

समष्टिवाद और व्यक्तिवाद

महाभारत में कहा गया है कि 'य यतो धर्मस्ततोजय :' अर्थात जहां धर्म है वहीं विजय है। तब लोग प्रश्न करते हैं, कि महाभारत के युद्ध में कौरवों के जितने प्रमुख सेनापति थे वह चालाकी से मारे गये। भीष्म को मारने के लिए शिखण्डी को खड़ा किया गया है। द्रोणाचार्य को युद्ध में समाप्त करने के लिए युधिष्ठिर से झूठ बुलवाया गया। जयद्रथ की मृत्यु का कारण सूर्य का बादलों में छिपना और प्रकट होना बताया जाता है। दुर्योधन की मृत्यु तो कमर के नीचे गदा मारने से ही भीम के हाथों हुई। इस आधार पर पूछा जा सकता है कि पाण्डवों की जीत के लिए यह सब जो कार्य हुए क्या उन्हें धर्मानुकूल कहा जायेगा? क्या पाण्डवों ने छल किया। फिर भी जहाँ धर्म वहां जय की घोषणा ने छल किया। फिर भी जहाँ धर्म तहाँ जय की घोषणा वेदव्यास करते हैं। तो क्या यह परस्पर विरोधी बात नहीं है। क्या धर्म के नाम पर अधर्म नहीं हुआ?

इसका उत्तर खोजने पर विदित होगा कि कौरव और पाण्डव पक्ष के बीच एक बड़ा मूलगामी अन्तर था। कौरव पक्ष का प्रत्येक व्यक्ति, व्यक्तिवादी था इस लिए अनर्थ का साथ दे रहा था। भीष्म पितामह विद्वान थे किन्तु उनका व्यक्तिवादी दृष्टिकोण इसी बात से प्रकट हो जाता है कि उन्होंने सोचा – मैंने प्रतिज्ञा की हैं, शिखण्डी के आने के बाद मैं बाण नहीं चलाऊँगा। भीष्म पितामह ने यह नहीं सोचा कि वह सेनापति हैं, उन पर सेना का भार है। उन्हें केवल अपनी निजी प्रतिज्ञा की चिन्ता थी। दूसरी और अर्जुन ने जब इसी प्रकार का अपना व्यक्तिगत दुष्टिकोण बताकर शस्त्र रखने की बात कही तो भगवान कृष्ण ने उन्हें धर्म का रहस्य बताया कि तू यदि अपने तक सोचता है तो व्यर्थ सोचता है। अर्जुन ने 'मैं' को छोडा और 'हम' को स्वीकार किया। भीष्म पितामह ने न अपने अपने पक्ष का न समाज का किसी का भी विचार नहीं किया, केवल 'मैं' का विचार मात्र किया।

इस लिए यह स्पष्ट होता है कि कौरव पक्ष में पाण्डव पक्ष की तुलना में एक से एक बढ़ चढ़ कर योद्धा और सूर थे फिर भी उन सबकी कृतियां अलग – अलग थी। सबको अपनी अपनी ही चिन्ता थी। भीष्म को प्रतिज्ञा की चिन्ता थी। द्रोणाचार्य को पुत्र का मोह था। उनमें से प्रत्येक ने अपने – अपने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को छोड़ा। भगवान् कृष्ण के नेतृत्व में एक जुट होकर जो भी कार्य आया निभाया। जैसा कृष्ण ने कहा सब करते रहें। पाण्डव अपना – अपना अग्रह छोड़कर समष्टि के लिए ही कार्यरत हुए। उनका समष्टि का विचारकर कार्य करने का ढंग ही धर्म हुआ और व्यक्तिवादी आधार पर सोचने के कारण कौरवों का पक्ष अधर्म का पक्ष गिना गया। जीत धर्म की हुई, अधर्म की नहीं। याने समष्टिवाद ही धर्म है। व्यक्तिवाद अधर्म है। राष्ट्र के लिए काम करना धर्म है।

डॉ. डिम्पल
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग

महान समाजसेवक लाला लाजपतराय

लाजपतराय जी ने अपने आप को साहित्य, शिक्षा तथा समाज सेवा में पूरी तरह समर्पित कर दिया। सेवा करते – करते उन्होंने अपने वकील का धन्धा एक बाधा के रूप में महसूस किया। वकालत से धन कमाने के बाद भी वकालत से उनका लगाव न था। वह इसे केवल पेट पालने से अधिक ना थे।

शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान था। उनके प्रयत्न से ही 'दयानन्द कालेज' लाहौर आपना हुई थी जो बाद में पंजाब का राष्ट्रीय विद्यालय बन गया, जिसमें महान देश भक्त पढ़ने गये थे। ने 'दयानन्द ऐंगलो वैदिक समाचार' नामक एक पत्र निकाला। उन्होंने पंजाब के स्थानों पर शिक्षा ाओं को खोलने में योगदान दिया। उनके सहयोग से ही 'पंजाब नेशनल बैंक' की स्थापना हुई। लाला पतराय सात बार इस बैंक के डायरैक्टर रहे।

Scanned with ACE Scanner

विषय-सूची

१.	नागार्जुन : एक आंचलिक रचनाकार *विकास कुमार सिंह*	१-३
२.	उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का बढ़ता महत्व *आशुतोष कुमार एवं डॉ० रचना गंगवार*	४-८
३.	दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का व्यक्तित्व *देवेन्द्र प्रताप गौतम*	९-११
४.	समकालीन साहित्य में जीवन का यथार्थ *हरीलाल*	१२-१४
५.	'श्री युगल वर्ण विलास' में दार्शनिक चिंतन *डिम्पल*	१५-१९
६.	उदय प्रकाश की कहानियों में वर्तमान भारतीय समाज *बृजेश कुमार द्विवेदी*	२०-२४
७.	भारतीय समाज में अनुसूचित जातियों के शैक्षिक प्रस्थिति में परिवर्तन *विमलेश कुमार यादव*	२५-२८
८.	गुरु रविदास की वाणी में समाजदर्शन *कु० प्रियंका गौतम*	२९-३०
९.	धूमिल : एक आन्दोलन *डॉ० भुवनेश्वर दूबे*	३१-३५
१०.	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में बालिका शिक्षा एवं समस्यायें *राकेश कुमार*	३६-४०
११.	पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं का आरक्षण *हरदेव प्रसाद*	४१-४३
१२.	भक्ति कालीन संत कवियों के विश्वास और गुरुनानकदेव के सन्देश *कुमारी अनीता*	४४-४७
१३.	लोक साहित्य में वर्णित लोकधर्म *डॉ० ऋचा सिंह*	४८-५०
१४.	सांस्कृतिक संचेतना और व्यावसायिक संचार *डॉ० प्रतिमा बनर्जी*	५१-५४
15.	**Entrepreneurship In Academic And Service Sector** ***Ashwani Kumar Gupta***	**55-58**
16.	**Implications of National Food Security Bill 2013** ***Devendra Kumar***	**59-62**
17.	**Rural Marketing – Potentials and Strategies for Durables A Study in rural areas of Gorakhpur District** ***Atresh Kumar Tripathi***	**63-67**

❖❖❖

Scanned with ACE Scanner

ISSN : 2319-3212

शोध वाणी

Shodh Vani

An International Refereed Research Journal

मई-अगस्त २०१५

Scanned with ACE Scanner

'श्री युगल वर्ण विलास' में दार्शनिक चिंतन

*डिम्पल

मनुष्य और पशु भी अपने–अपने जीवन की रक्षा के लिए प्रत्यन्त करते हैं। पशु का जीवन प्रायः निरूउद्देश्य होता है, वह सहज–प्रकृत प्रवृत्ति से परिचालित होता है। किन्तु, मनुष्य अपनी बुद्धि की सहायता लेता है। वह अपना तथा संसार का यर्थाथ ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार जीवन–यापन करना चाहता है। वह केवल अपने वर्तमान लाभ के संदर्भ में ही नहीं सोचता है, वरन् भविष्य के परिणामों के विषय में भी सोचता है। मनुष्य में बुद्धि की विशेषता है। बुद्धि की सहायता से वह युक्तिपूर्णक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। युक्तिपूर्वक तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के प्रत्यन्न को ही 'दर्शन' कहते हैं।

'दर्शन' शब्द दृश् धातु में ल्युट् प्रत्यय के लगने से निर्मित होता है, जिसका शाब्दिक निर्वचन के आधार पर अर्थ है–जिसके द्वारा देखा जाए।'1 'हिन्दी विश्वकोश मानता है कि जिसके द्वारा यर्थाथ तत्त्व का ज्ञान होता है, उसे दर्शन कहते है।'2 हम कौन हैं? कहां से आये हैं? इस सर्वतो दृश्यमान् जगत का सच्चा स्वरूप क्या है? इसकी उत्पत्ति कहां से हुई? इसकी सृष्टि का कौन कारण है? जीवन को सचारू रूप से बताने के लिए कौन–सा सुंदर साधान मार्ग है? आदि प्रश्नों का समुचित उत्तर देना दर्शन का प्रधान ध्येय है। वस्तुतः दर्शन एक ऐसा आध्यात्मिक ज्ञान है, जो आत्मारूपी इन्द्रिय के समक्ष सम्पूर्ण रूप में प्रकट होता है।

दर्शन से ही दार्शनिक बनता हैं जिसका अर्थ है दर्शनशास्त्र का ज्ञाता, तत्त्व ज्ञानी। 'दर्शनशास्त्र का भाव है वह विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा और जीवन के अन्तिम लक्ष्य आदि का विवेचन होता है, और तत्त्व ज्ञान भाव है–ब्रह्मा, आत्मा और ईश्वर आदि के सम्बन्ध का सच्चा और ठीक ज्ञान अर्थात् ब्रह्म ज्ञान।'3

'दर्शन कविता का विषय नहीं चिंतन का विषय है। दर्शनशास्त्र का संबंध दो प्रकार के प्रश्नों से होता है–'स्व' संबंधी प्रश्न तथा 'पर' संबंधी प्रश्न। 'स्व' संबंधी प्रश्न तथा 'पर' संबंधी प्रश्न। 'स्व' संबंधी प्रश्नों में मनुष्य अपने संबंध में सोचता है। 'पर' संबंधी प्रश्नों में ईश्वर, गुरु, सृष्टि माया, जीवात्मा–परमात्मा संबंधी प्रश्नों से जुड़ा है।'4 इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजना दार्शनिक चिंतन का लक्ष्य होता है। दर्शन की मूल चेतना ही आत्मसाक्षात्कार है। इसी पर मनु ने लिखा है कि 'सम्यक् दर्शन के अधिगत हो जाने पर कर्म मानव को बंधन में डाल नहीं सकते, जिनको यह सम्यक् दृष्टि नहीं प्राप्त है, वे ही संसारिक बंधन में फंसते हैं।'5

दार्शनिक चिंतन के विभिन्न पक्षों को युगलानन्य शरण ने 'श्री युगल वर्ण विलास' में उद्घाटित किया है। 'श्री युगल वर्ण विलास' में उपलब्ध दार्शनिक पहलू देखने से पूर्व युगलानन्य शरण के विषय में जानना भी आवश्यक है। अतः युगलानन्य शरण का परिचय इस प्रकार है–

कवि युगलानन्य शरण का परिचयः 'युगलानन्य शरण' का आविर्भाव पटना जिले के इस्लामपुर गांव में सन् 1818 ई. कार्तिक शुक्ल 7, सं.1878 को हुआ था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में सारन के शृंगारी रामोपासक युगल प्रिया के शिष्य होकर विरक्त वेष धारण कर लिया। कुछ

* शोधछात्रा (हिन्दी), गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

Scanned with ACE Scanner

ISSN 2229 4732

शब्द सरोकार

अंक 47, वर्ष 12 अप्रैल–जुलाई 2015

सम्पादक डॉ. हुकुमचन्द राजपाल

Scanned with ACE Scanner

शब्द-सरोकार

(मालवा साहित्य कला मंच की साहित्यिक हिंदी पत्रिका)

अंक 47, वर्ष 12 अप्रैल–जुलाई 2015

संस्थापक :
स्व॰ डॉ॰ प्रेमप्रकाश सिंह
संरक्षक :
श्रीमती डॉ॰ प्रेमप्रकाश सिंह
श्री जयप्रकाश सिंह धालीवाल
परामर्श :
डॉ॰ मनमोहन सहगल
प्रो॰ कुलवंत सिंह ग्रेवाल
डॉ॰ हरजिन्दर वालिया
सम्पादक :
डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल
संयुक्त सम्पादक :
डॉ॰ सुरेश नायक, डॉ॰ नविला, डॉ॰ रविदत्त 'कौशिश'
उपसम्पादक :
डॉ॰ कृष्ण भावुक
डॉ॰ मीनाक्षी काला (अमृतसर)
डॉ॰ सत नारायण (नई दिल्ली)
डॉ॰ वीरेन्द्र वालिया
डॉ॰ हरविन्दर कौर (पटियाला)
प्रबन्ध सम्पादक :
श्री संजय राजपाल
आवरण-पृष्ठ :
प्रिं॰ वीरेन्द्र सिंह घुम्मण, श्री संजय राजपाल

सम्पर्क : गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज – 1,
पटियाला – 147 002, (पंजाब)
फोन : 2283050 (0175),
0–99157-83050.
email : sanjyotima@gmail.com

ISSN 2229 4732 SHABAD SAROKAR

अनुक्रम

सम्पादकीय : 3-4.
आलेख : प्रेमप्रकाश सिंह 5, रमेश कुंतलमेघ 7, चमन लाल गुप्त 10, चन्द्र त्रिखा 15, आरती अग्रवाल 17, रविदत्त 'कौशिश' 20, नविला 24, सुरेश नायक 29, सीता बिम्ब्राँ 32, प्रद्युम्नशाह सिंह 40, ज्योति 42, दीपशिखा 44, नरेन कुमार 51, निशा जमवाल 54, विनम रानी 57, मंजुबाला 59, कुमारी डिम्पल 62, नीलम कुमारी 67, आरती शर्मा 72, डिम्पल 76.
कविता : महेन्द्र जैन 9, मानवता घुम्मन 9, ऋषिबाला 14, निशि मोहन 14, तरुणा 19, गुरदर्शन 'बल' 23, सिमर 'सदोष' 28, नवीन कमल भारती 39, महेन्द्र प्रताप पाण्डेय 'नन्द' 43, माधव कौशिक 50, हरमहेन्द्र सिह बेदी 50, चन्दन स्वप्निल 50, भूपेन्द्र सिंह 53, सरोज परमार 56, जयसिंह अलवरी 61, नीलम जुल्का 66, प्रेम भूषण गोयल 71, कुलभूषण कालड़ा 75, मंजु वालिया 75, सुषमा गुप्ता 89, अनीता कोमल 89, सुभाष रस्तोगी 91, हरिभजन प्रियदर्शी 91, सुशील बाला 92, अतुला भास्कर 92, मनीष कुमार 92, वीरेन्द्र के॰ कौशल 93.
कहानी : चन्द्र भार्गव 81, सुकीर्ति भटनागर 85,
लघुकथा : संदीप 'सोखल' 90.
श्रद्धा–सुमन : 56, 93-94.
पत्र–प्रतिध्वनियाँ : 95.
लेखकीय पते : 96.

इस अंक का मूल्य : 60 रुपये (साधारण डाक–व्यय सहित) : **90 रुपये** (कूरियर/पंजीकृत डाक सहित)
वार्षिक : 250 रुपये साधारण डाक द्वारा (**कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 350 रुपये**), **आजीवन : 1100 रुपये** साधारण डाक द्वारा (**कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 1500 रुपये**), **विशिष्ट सदस्यता : 1500 रुपये**
प्राप्ति–स्थान : **गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज – 1, पटियाला (पंजाब) – 147 002.**

Scanned with ACE Scanner

रीतिकालीन विलास काव्य-परंपरा और मान कृत 'राजविलास' का वैशिष्ट्य

– डिम्पल

हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम इतिहास साहित्यकारों, कवियों, आचार्यों, विद्वानों में गहन–चिन्तन–मनन एवं लेखन का प्रतिफलन हैं। हिन्दी साहित्य का जितना अनुशीलन, अन्वेषण एवं शोध किया जाए, उतना ही विस्तृत रूप सहृदय के समक्ष प्रस्तुत हो जाता है। देखा जाए तो आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक कई काव्य रूप उपलब्ध हैं। जैसे – वीर काव्य, नीति परक काव्य, सतसई काव्य, भक्ति काव्य, रासो काव्य, रास काव्य, शास्त्रीय काव्य, रीतिपरक काव्य आदि। काव्य का उद्देश्य सहृदय, पाठक को आनन्द प्रदान करना है। इसी से सम्बन्धित एक काव्य रूप विलास काव्यों की रचना भी इस काल में हुई है। यह विलास काव्य हज़ारों की संख्या में लिखे गए, जो पाण्डुलिपियों में सुरक्षित हैं। वास्तव में इन विलास काव्यों पर साहित्यकारों, आलोचकों की दृष्टि कम ही गई हैं। इन्हीं विलास काव्यों की परम्परा पर विचार करने से पूर्व विलास का अर्थ जान लेना अपेक्षित है।

'विलास शब्द 'वि' उपसर्ग और 'लास' धातु से बने 'लस' शब्द के प्रयोग से बना है। 'वि' का अर्थ है विशेष और 'लस' का अर्थ है – आकर्षण अथवा मन या चित लगाने वाली बात। इस रूप में 'विलास' का अर्थ इन रूपों में समझा जा सकता है। जैसे – प्रसन्न करने वाली क्रिया, मनोविनोद, आनन्द, हर्ष, यथेष्ट सुख–भोग। अतः इस तरह विलास काव्य से अभिप्राय किसी कवि की वह पद्यात्मक साहित्यिक रचना, जिसमें कवि मन या चित्त को लगने वाली वह बात जिसको कवि कोमल और मधुर रूप में आनन्दानुभूति के साथ व्यक्त करें, वह 'विलास काव्य' है।'[1]

इसी तरह विलास काव्य की परम्परा पर विचार करें तो विलास काव्य की परम्परा बहुत प्राचीन है। विलास काव्य की परम्परा संस्कृत से होते हुए हिन्दी में पल्लवित हुई। संस्कृत में 7वीं शती के पूर्वार्ध में महेन्द्र विक्रम वर्मा का मत्त विलास 10वीं शती का प्रथमार्ध में राजशेखर का हरि विलास, 11वीं शती में लोलिम्बराज का हरि विलास आदि विलास काव्य मिलते हैं। हिन्दी साहित्यकारों में आदिकाल, भक्ति काल में छुट–पुट काव्य ही मिलते हैं। जैसे – अनुमान के आधार पर 1135 ई॰ में अहमद उल्लाह कृत 'दक्षन विलास'। लम्बे समय के बाद अनुमान के आधार पर 1609 सं॰ में नारायण भट्ट कृत 'ब्रज–भक्ति विलास', 1694 सं॰ में जटमल कवि कृत 'प्रेम विलास' तथा 1698 सं॰ में नील कंठ कृत 'वीर विलास' मिलते हैं। रीतिकाल में आकर विलास काव्यों की सुस्पष्ट एवं सुदीर्घ परम्परा मिलती है। रीतिकाल में राधा–कृष्ण, राम, विष्णु, अन्य देवी–देवताओं, गुरुओं, काव्यशास्त्रीय (रस, अलंकार, छंद, नायक–नायिका), सतसई, नीतिपरक, राजाओं सम्बन्धी विलास काव्यों की परम्परा का निर्वाह रीतिकाल में उपलब्ध होता है। विलास काव्यों की अपनी बहुत सी विशेषताएँ हैं। जैसे – स्तुति गान, वंशज महिमा, भक्ति–भावना, रूप सौन्दर्य, गीत–संगीत, राग, नृत्य, शास्त्रीय विवेचन, वीर भावना आदि। यदि वीर काव्यों की बात की जाए तो हिन्दी साहित्य का तो प्रारम्भ ही वीर काव्यों से माना जाता है, जिसे आदि काल के नाम से जाना जाता है। इतिहासकारों ने उसे वीरगाथाकाल की संज्ञा दी है। वीरगाथाकाल के बाद भक्तिकाल में भी कई वीर रस प्रधान ग्रंथ लिखे गये, जिनमें केशवदास रचित 'वीरसिंह चरित' का नाम प्रमुख है। हिन्दी साहित्य जगत् में भक्तिकाल के पश्चात् रीतिकाल में जहाँ एक ओर श्रृंगार रस प्रधान ग्रंथों की विपुल रचना हुई, वहीं वीररस प्रधान बहुत–से काव्य–ग्रंथ लिखे गये। रीतिकाल का राजनीतिक वातावरण ही ऐसा था कि कवि वीर रस की रचना करने को बाध्य था। मुगल सल्तनत अपने राज्य–विस्तार में लगी थी, तो शिवाजी और छत्रसाल जैसे योद्धा अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिए मुगल सत्ता से निरन्तर टक्कर लेने में लगे थे। हिन्दु राजा राज्य विस्तार के लिए पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करने में गर्व समझते थे। इस युग में युद्धों की भरमार थी। ऐसे ही एक राजा राज सिंह भी हैं, जिन्होंने हिन्दू राज्यों को बचाने हेतु बहुत शौर्य दिखाया। कवि मान सिंह के जीवन का राज विलास में वर्णन कर यह बताना चाहता है कि भारतीय राजाओं की वीरता के कारण ही मुगल औरंगज़ेब जैसे शासकों को भारत जैसी भूमि से खदेड़ने का श्रेय भारतीय राजाओं को ही जाता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद

Scanned with ACE Scanner

सम्मेलन पत्रिका

(शोध-त्रैमासिक)

भाग 100 संख्या-3

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
इलाहाबाद

Scanned with ACE Scanner

विषय-सूची

क्र.सं०	आलेख	लेखक	पृष्ठ
१.	२१वीं सदी के प्रथम दशक के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना	डॉ० अमरसिंह वधान	५-११
२.	दसवें दशक का हिन्दी उपन्यास : राजनीतिक मोहभंग की स्थिति	रुपिन्द्र शर्मा	१२-१९
३.	'साकेत' में राजनीति और राष्ट्रीयता	डॉ० रेखा बाजपेयी	२०-२६
४.	मणिपुरी भाषा तथा उसकी विशेषताएँ	देवजानी नेप्रम	२७-४३
५.	उत्तराखण्ड के बाल काव्य मे राष्ट्र प्रेम	डॉ० रंजू उनियाल	४४-५१
६.	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य का औपन्यासिक-संसार	अमरेन्द्र त्रिपाठी	५२-६२
७.	कविता की भाषा मे मनुष्यता की तलाश : संदर्भ–धूमिल	डॉ० किरण शर्मा	६३-६९
८.	यशपाल की सर्जनात्मकता	प्रदीप जुगरान	७०-७२
९.	बीसलदेव रास : पारम्परिक नारी की गाथा	प्रो० रुद्रदेव	७३-७६
१०.	'श्री युगल वर्ण विलास' में दार्शनिक चिन्तन	सुश्री डिम्पल शर्मा	७७-८२
११.	महाकाव्य 'साकेत' में प्रकृति चित्रण का स्वरूप	डॉ० रहीस हसन	८३-८५
१२.	सिद्ध और नाथ साहित्य मे लोक एवम् शास्त्र	अरुण प्रसाद रजक	८६-९०
१३.	आचार्य सोमनाथ की काव्य संवेदना	डॉ० अनुपम शुक्ल	९१-१९०
१४.	सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता	डॉ० क्रिष्नाभाई डी० पटेल	१११-१२२
१५.	अमीर खुसरो के हिंदवी काव्य का उत्स - लोकसाहित्य	डॉ० नेहा बैद	१२३-१२७
१६.	उदय प्रकाश और वरियाम सिंह संधू की कहानियों में राजनीति का साम्प्रदायिक संदर्भ (तुलनात्मक अध्ययन)	एकता जैन	१२८-१३४
१७.	उत्तराखण्ड में लोक-पर्वो के रंग	डॉ० बसुन्धरा उपाध्याय	१३५-१३८
विविधा			
१८.	शब्द की अग्निशिखा : संदर्भ माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य	प्रो० रामकिशोर शर्मा	१३९-१४४

Scanned with ACE Scanner

'श्री युगल वर्ण विलास' में दार्शनिक चिन्तन

सुश्री डिम्पल शर्मा

मनुष्य और पशु भी अपने-अपने जीवन की रक्षा के लिय प्रयत्न करते हैं। पशु का जीवन प्राय: निरुद्देश्य होता है, वह सहज-प्रकृत प्रवृत्तिसे परिचालित होता है। किन्तु, मनुष्य अपनी बुद्धि की सहायता लेता है। वह अपना तथा संसार का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार जीवन-यापन करना चाहता है। वह केवल अपने वर्तमान लाभ के संदर्भ में ही नहीं सोचता है, वरन् भविष्य के परिणामों के विषय में भी सोचता है। "मनुष्य में बुद्धि की विशेषता है। बुद्धि की सहायता से वह युक्तिपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। युक्तिपूर्वक तत्त्व ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही 'दर्शन' कहते हैं।"[१]

" 'दर्शन' शब्द दृश धातु में ल्युट् प्रत्यय के लगने से निर्मित होता है, जिसका शाब्दिक निर्वचन के आधार पर अर्थ है— जिसके द्वारा देखा जाय।"[२]

हिन्दी विश्वकोश मानता है कि "जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व का ज्ञान होता है, उसे दर्शन कहते हैं।"[३]

"हम कौन है? कहाँ से आये हैं? इस सर्वतो दृश्यमान् जगत का सच्चा स्वरूप क्या है? इसकी उत्पति कहाँ से हुई? इसकी सृष्टि का कौन कारण है? जीवन की सुचारू रूप से बताने के लिए कौन-सा सुन्दर साधन मार्ग है? आदि प्रश्नों का समुचित उत्तर देना दर्शन का प्रधान ध्येय है"[४] वस्तुत: "दर्शन एक ऐसा आध्यात्मिक ज्ञान है, जो आत्मा रूपी इन्द्रिय के समक्ष सम्पूर्ण रूप से प्रकट होता है।"[५]

दर्शन कविता का नहीं चिन्तन का विषय है। "दर्शन शास्त्र का सम्बन्ध दो प्रकार के प्रश्नों से होता है। 'स्व' सम्बन्धी प्रश्न तथा 'पर' सम्बन्धी प्रश्न। 'स्व' सम्बन्धी प्रश्नों में मनुष्य अपने सम्बन्ध में सोचता है 'पर' सम्बन्धी प्रश्नों में ईश्वर, गुरू, सृष्टि माया, जीवात्मा-परमात्मा सम्बन्धी प्रश्नों से जुड़ा है। इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजना दार्शनिक चिन्तन का लक्ष्य होता है।"[६] दर्शन की मूल चेतना ही आत्मसाक्षात्कार है। इसी पर मनु ने लिखा है कि "सम्यक दर्शन के अधिगत हो जाने पर कर्म मानव को बंधन में डाल नहीं सकते, जिनको यह सम्यक् दृष्टि नहीं प्राप्त है, वे ही सांसारिक बंधन में फंसते हैं।[७] दार्शनिक चिन्तन के विभिन्न पक्षों को युगलानन्य शरण ने 'श्री युगल वर्ग विलास' में उद्घाटित किया है—

कवि परिचय

'युगलानन्य शरण' का आविर्भाव पटना जिले के इस्लामपुर गाँव में सन् १८१८ ई० (कार्तिक शुक्ल ७, सं० १८७८) को हुआ था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में सारन के श्रृंगारी रामोपासक युगल प्रिया के शिष्य होकर विरक्त वेष धारणकर लिया। कुछ दिन काशी में रहकर ये अयोध्या चले गए। यहीं इनकी प्रधान साधना भूमि बनी। अयोध्या में लक्ष्मण किला पर इनकी गद्दी अब तक स्थापित है। रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह और रघुराज सिंह ने इनकी प्रेरणा से चित्रकूट में भव्य राम मन्दिर और सन्त निवास निर्मित कराये। परवर्ती रसिक सन्तों में इनकी शिष्य परम्परा सर्वाधिक विस्तृत एवं प्रख्यात हुई। इनकी रचनाओं की संख्या ८४ बताई जाती है।[८] उनमें से निम्नांकित ७४ लक्ष्मण किले के 'सरस्वती भण्डार में सुरक्षित हैं—

Scanned with ACE Scanner